ओमशांति। बच्चों ने यह गीत सुना। यह किसकी महिमा थी? भोलेनाथ शिव की। प०पि०प० को भोलानाथ भी कहते हैं, नॉलेजफुल भी कहते हैं, पतित–पावन भी कहते हैं। इनको कहा जाता प०पि०। लौकिक बाप को प०पि० नहीं कहेंगे। प०पि० सदैव एक परमात्मा को ही कहा जाता। आत्मा अपने प०पि० परम+आत्मा यानी परमात्मा की महिमा करती है। कहते हैं भक्तों का रखवाला अर्थात् भक्तों को फिर इस भक्ति का फल देने वाला। भक्तों को भगवान क्या फल देंगे; क्योंकि भक्ति है दुर्गति में? भगवान आकर फल देते हैं– गति–सद्गति का। गति अथवा मुक्ति मिलती है निर्वाणधाम में। इनको निराकारी दुनिया कहा जाता है। आत्मा भी निराकार है। निराकार आत्मा को मिला है यह साकार शरीर। किसलिए? कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाने। अब कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाते–2, भारत जो हीरे जैसा था, स्वर्ग था, ऊँच ते ऊँच पवित्र खण्ड था, वह अब कौड़ी जैसा अपवित्र खण्ड बन गया है। आदि–मध्य–अंत का राज़ बाप बैठ समझाते हैं। आदि में था देवी–देवता राज्य। मध्य में रावण का राज्य शुरू होता है, देवी–देवताएँ वाममार्ग में चले जाते हैं। भारत पावन था, अब पतित है। यह भी समझना चाहिए, इस पतित दुनिया को पावन बनाने वाला प०पि०प० है, जिसको भक्त याद करते हैं। भक्त पतित हैं। जब बाप आकर पावन बनाते हैं फिर भक्त कोई रहते नहीं, न कोई पुकारते हैं। सतयुग में जब देवी–देवताओं का राज्य था तो भगवान को कोई याद नहीं करते थे, सब सुखी थे। भारत सुखधाम था। ऐसे नहीं, इस्लामी खण्ड व बौद्धी खण्ड स्वर्ग था। नहीं, भारत ही आदि सनातन है। बरोबर सतयुग में देवी–देवताओं का राज्य था, ज़रूर प०पि०प० ने ही राज्य दिया होगा। एक ही भारत खण्ड में देवी–देवताओं का राज्य था। जब देवी–देवताओं का राज्य था तो क्षत्रिय राज्य नहीं होता। यह कौन बैठ समझाते हैं? नॉलेजफुल गॉड फादर। वह सत् है, चेतन है। आत्मा भी सत् है, चेतन है। यह शरीर है जड़, इनको आत्मा चलाती है। आत्मा निकल जाती है तो शरीर जड़ हो जाता। आत्मा इमॉरटल है, उन(का) कब विनाश नहीं होता। कितनी ढेर आत्माएँ हैं! 500 करोड़ आत्माएँ हैं। सतयुग में एक ही देवता धर्म था तो बहुत थोड़े थे, फिर झाड़ वृद्धि को पाता है। यह सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का ज्ञान कोई शास्त्रों में नहीं है। सब है भक्तिमार्ग की सामग्री। भक्ति को दुर्गति कहेंगे। कहते भी हैं– हे पतित–पावन आओ! तुम्हारा बापू गाँधी जी भी चाहते थे, राम राज्य हो। हाथ में गीता थी; क्योंकि गीता के ज्ञान द्वारा प०पि०प० ने भारत को स्वर्ग बनाया। वर्ल्ड ऑलमाइटी राज्य था। विश्व के मालिक थे। किसने मार्ग बताया? ज़रूर विश्व के रचता ने विश्व का मालिक बनाया। शिवबाबा कहते हैं, हम आए थे। तुम शिव जयंती मनाते हो न! 5000 वर्ष की बात है। गीता में ही भगवानुवाच लगा हुआ है। भारतवासी तमोप्रधान होने कारण भगवान को नहीं जानते। भगवान है ऊँच ते ऊँच रचता। ब्र०वि०शं० को भी रचने वाला। वह है निराकार शिव। इनको अपना शरीर नहीं है। ब्र०वि०शं० को सूक्ष्म शरीर होने कारण इनको देवता कहा जाता है। प०पि०प० खुद कहते हैं– मैं रचता हूँ। यह सब मेरे बच्चे हैं। आत्मा के रूप में तुम सब ब्रदर्स हो। ऐसे नहीं, सब फादर हैं; जैसे सन्यासी लोग कहते हैं– आत्मा सो परमात्मा। नहीं, परमात्मा, परमात्मा है। ड्रामा में परमात्मा का पार्ट अलग है। वह क्रियेटर, डायरैक्टर हैं, करन–करावनहार हैं। ब्रह्मा द्वारा फिर से आदि देवी–देवता धर्म की स्थापना कराते हैं। ब्रह्माकुमार–कुमारियों को एडॉप्टेड करते हैं। मुखवंशावली को एडॉप्टेड कहा जाता है। यह है ब्रह्मामुखवंशावली ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। प०पि०प० ने एडॉप्ट किया है, जो कि स्वर्ग का रचता है। अब राजयोग सिखलाए रहे हैं। ऐसे नहीं, आत्मा सो परमात्मा। इतने 500 करोड़ आत्माएँ इमॉरटल हैं। यह बड़ा ड्रामा है बेहद का। इस ड्रामा की राज़ का भी किसको पता नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं, मैं कल्प–2 कल्प के संगमयुगे आता हूँ। मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। यह बिचारा भी अपने जन्मों को नहीं जानता था, मैं सुनाता हूँ। मैं इसमें आता हूँ। इनका नाम मैंने 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखा है। मुझे

आना है पतित दुनिया में। यह प्रजापिता ब्रह्मा तो पतित है। इनका भी अंतिम जन्म है, 84 जन्म पूरे किए हैं। यह ब्रह्मा–सरस्वती ही सो श्री ल०ना० थे। सरस्वती कौन है, यह मनुष्य भी नहीं जानते। सरस्वती को भगवती नहीं कह सकते। यह है ब्रह्मा की मुखवंशावली का नाम। जगदम्बा सरस्वती है ब्रह्मा की बेटी। सो तो हुआ संगमयुग जगदम्बा कामधेनु। ब्रह्मा को कपिलदेव भी कहते हैं। इनको महावीर, आदिदेव भी कहते हैं। दिलवाला भी कहते हैं। वास्तव में, दिलवाला तो शिवबाबा है; परन्तु बच्चों की दिल लेते स्वराज देने लिए। बच्चे कहते हैं, हमको फिर से सदा सुखी बनाओ। तो शिवबाबा ब्रह्मा तन में आकर तुम्हारी दिल ले रहे हैं, तुमको पढ़ाय रहा हूँ। पतित मनुष्य कहते हैं– भगवान! आओ, आकर हमको मनुष्य से देवता, पावन बनाओ। दिल लेने आते हैं; इसलिए दिलवाला मंदिर यादगार बना है। वह है जड़ मंदिर। तुमने 5000 वर्ष पहले भारत को स्वर्ग बनाया था, इसका भी यादगार मंदिर है और तुम फिर से सर्विस कर रहे हो। फिर यह जड़ मंदिर टूट–फूट जावेंगे। बाप कहते, मैं कल्प–2 पुराने, पतित तन में आता हूँ पावन बनाने। यहाँ कोई पावन नहीं हैं। सन्यासी के तन में तो आना न है। वह है हठयोग कर्मसन्यास। वह धर्म अलग हो गया। अभी अनेक धर्म हैं। बाकी आदि सनातन देवी–देवता धर्म है नहीं। देवता धर्म वाले हिन्दू कह देते हैं। देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। देवी–देवताएँ बिल्कुल पवित्र थे। वह जब से वाम मार्ग में गए, तो देवी–देवता कहलाना बन्द कर दिया। देवता धर्म को प्रायःलोप तो होना ही है। वास्तव में, पहले–2 है ही डीटी धर्म, फिर इस्लामिज़्म, बौद्धीज़्म। हिन्दुज़्म तो है नहीं। हिन्दू धर्म कब स्थापन हुआ? आदि सनातन तो देवी–देवताएँ थे। तो यह भोलानाथ शिव समझा रहे हैं। भोली बच्चियाँ जो हैं, उनकी झोली भर, उनको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बड़ा भोला सौदागर है। जैसे कोई मरता है तो पुरानी चीज़ करनीघोर को दे देते हैं न! बाप भी कहते हैं, मैं तुम्हारी कीचड़–पट्टी लेकर तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता। तुम शिवालय में रहने वाले थे। शिव ने सतयुग स्थापन किया था, अब वैश्यालय बन गया है। इसको फिर शिवालय मैं बनाता हूँ। वैश्यालय माया बनाती है। वर्णों का राज़ भी बच्चों को समझाया है। पुनर्जन्म लेते आते हैं, वर्ण बदलते जाते हैं। मनुष्य कह देते– 84 लाख जन्म लेते हैं। बाप को उलाहना देते हैं। 84 जन्मों के बदले 84 लाख जन्म लगाय दिए हैं और मेरे लिए कह देते हो– सर्वव्यापी। मैं तो हूँ नहीं, इस समय तो सर्वव्यापी 5 शैतान हैं। सतयुग में यह नहीं थे। वह तो देवताएँ थे, अब असुर बने हैं। फिर असुर से देवता बनाया जाता है। तो बाप समझाते हैं, ऊँच ते ऊँच है भगवान, फिर उनकी रचना ब्र०वि०शं०। यह है स्थूलवतन, जिसमें पहले हैं देवी–देवताओं का राज्य, फिर क्षत्रियों का राज्य, फिर वैश्य–शूद्र का राज। अभी तो है नो राज्य। शूद्र राज भी नहीं है। यह है प्रजा का प्रजा पर राज। इनको इररिलीजियस, इनसॉलवेट कहा जाता है। सतयुग में रिलीजियस, राइटियस थे, कब एक/दो को दुःख नहीं देते थे। भारत की बड़ी महिमा है; परन्तु शास्त्रों में उल्टा–सुल्टा लिख महिमा को उड़ा दिया है। प्राचीन भारत का योग और ज्ञान बड़ा नामी है। किसने सिखाया? श्रीमत भगवानुवाच, कृष्ण नहीं। तो बाप बैठ समझाते हैं, मेरा भी ड्रामा में यहाँ आने का पार्ट है। यह आत्मा जन्म–मरण में नहीं आती है। वह ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। यह महिमा और कोई की नहीं है। देवताओं की महिमा अलग है। हर एक एक्टर का पार्ट अलग है, उस पार्ट अनुसार महिमा होती है। तुम जानते हो ऊँच ते ऊँच इनकॉरपोरियल गॉड फादर है। लौकिक फादर को गॉड फादर नहीं कहेंगे। वह है हद का बाप, यह है बेहद का बाप। पुकारते तो सब हैं– हे परमात्मा! समझते हैं, बाप आवेगा तो हमको स्वर्गधाम व मुक्तिधाम ले जावेगा। अजामिल जैसे पापियों, साधुओं आदि सबका उद्धार करता है इन माताओं द्वारा ...। यह है शिवशक्ति भारत माताएँ। योगबल से काम ले रहे हैं। वह कन्याएँ–माताएँ वायोलेंस

ड्रिल सीखते हैं। यहाँ वह है योगबल की ड्रिल और तुम हो श्रीमत पर। तुम और संग पुरानी दुनिया से प्रीत तोड़, एक बाप से जोड़ते हो। कौरव हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि और तुम पांडव हो विनाश काले प्रीत बुद्धि। तुम भारत को स्वर्ग बनाती हो। बाप से प्रतिज्ञा करती हो– बाबा, हम पवित्र रह भारत को पावन बनाने मदद करेंगे; क्योंकि अब मृत्युलोक मुर्दाबाद है; अमरलोक जिंदाबाद होता है। बाप अमरकथा सुना रहे हैं। तुम भी पार्वतियाँ हो, सजनियाँ हो। बाप की सूरत में वर्सा लो, सजनी की सूरत में कहते हैं, गुल–2 बन जाओ। तुम महाराजा–महारानी बनते हो। यह सब राज़ बाप बैठ समझाते हैं। बाप ही नॉलेजफुल, क्रियेटर, डायरैक्टर हैं। ब्र०वि०शं० हैं रचता; इसलिए त्रिमूर्ति शिव कहा जाता है। वह लोग फिर त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं। है त्रिमूर्ति शिव, तीनों को रचने वाला। शिवबाबा को भूल जाने से नास्तिक बन पड़े हैं। 'ओह, गॉड फादर!' कहते हैं; परन्तु उनके ऑक्युपेशन को नहीं जानते। माया सबको नास्तिक बनाती है, मैं फिर आकर आस्तिक बनाता हूँ। बाप को भूल जाने कारण आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। बाप समझाते हैं यह भारत विश्व का मालिक था। कोई भी पार्टीशन नहीं थे। आकाश, धरती, वायु आदि सबके मालिक थे। अब तो कितने पार्टीशन हो गए (हैं)– फलाने हद में यह न आवे। कितना झगड़ा है! भारत बेहद का मालिक हीरे जैसा था, अब भारत हद का मालिक कौड़ी जैसा बन गया है। यह ड्रामा है। हर एक आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है। कोई को 84 जन्मों का पार्ट है, कोई का दो–तीन जन्म का भी पार्ट है। यह है इम्पेरिसीबुल ड्रामा, जो रिपीट होता रहता है। भारत जैसा पवित्र खण्ड कोई होता नहीं। घर पुराना होता है तो इसको रिपेयर कराया जाता है न! तो भारत भी वाममार्ग में जाता है तो उन्हों को कुछ थमाने के लिए सन्यास मार्ग है। अभी तो वह भी तमो पड़ गए हैं। सारी दुनिया पुरानी बन पड़ी है, फिर नई बनेगी। पुराने घर में मज़ा नहीं होता है। बाप कहते हैं, फिर सतोप्रधान बनाने मुझे आना पड़ता है। मैं ही आकर भारत को जीवनमुक्त बनाता हूँ, बाकी आत्माओं (को) मुक्ति दे देता हूँ। बाप समझाते हैं– बच्चे, यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। पवित्र रहने से तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। कितनी भारी प्राप्ति है! सन्यासियों को तो कोई प्राप्ति नहीं। तुम 21 जन्म पवित्र दुनिया के मालिक बनते हो। तुम पुण्य आत्मा थे तो स्वर्ग के मालिक थे। पाप आत्मा माया ने बनाया है। फिर बाप आकर पुण्य आत्मा बनाते हैं। हिसाब–किताब चुक्तू कर सब वापिस जावेंगे। तो भोलानाथ बाबा लिबरेटर भी ठहरा। कहते हैं, मैं तुमको मुक्ति–जीवनमुक्ति धाम ले जाता हूँ। प०पि०प० है सबसे मीठा; इसलिए सब उनको याद करते हैं। फिर कह देते– सर्वव्यापी। बाप कहते हैं, कितनी नॉनसेन्स बुद्धि, मूर्ख बन गए हैं! सन्यासी लोग कहते– ईश्वर और उसकी रचना बेअन्त हैं। अभी तमोप्रधान बन गए हैं तो कह देते हैं– हम ईश्वर हैं। वह हैं हिरण्यकश्चप, जो अपन को ईश्वर कह पूजा कराते हैं। अबलाएँ माताएँ जाकर सन्यासियों के ऊपर 'जय शिवशंकर महादेव' कह पूजा करते हैं। शिवोहम् कह रड़ियाँ मारते हैं। कहाँ शिवबाबा की पूजा, कहाँ यह पतित अपन को ईश्वर कह पूजा कराते हैं! भोलानाथ बाप ऐसे माताओं द्वारा भारत को स्वर्ग बनाते हैं, जिसका यादगार यह दिलवाला मंदिर है। तुम हर एक के ऑक्युपेशन को जानते हो– सारा ड्रामा में हर एक का क्या पार्ट चलता है, कैसे पुनर्जन्म लेते हैं। पांडव थे गुप्त। यादव और कौरव प्रत्यक्ष थे। तुम हो इनकागनिटो नॉन वायोलेंस शक्ति सेना। 21 जन्म विश्व का मालिक बनना है तो मेहनत भी करनी पड़े। कदम–2 श्रीमत पर चलना है। बाबा की याद भूले, लगा माया का गोला। एकदम हड़खड़ है। इसलिए अपने बाप को याद करना है। अपने को आत्मा निश्चय करना है। मौत सामने खड़ा है। पापों का बोझा बहुत भारी है। जहाँ जीओ तां पुरुषार्थ में रहना है। और कुछ भी याद न रहे। इस मृत्युलोक में आना ही नहीं है। यह दुनिया बदल रही है। यादव और कौरवों ने तो अपने कुल का नाश किया, बाकी पांडवों ने अपना राज पाया। काँग्रेसी भी थे न; परन्तु अब हम पांडव बाप के बने हैं। कौरवों की लड़ाई यवनों से है। यवन है भारत के पहले दुश्मन। रक्त की नदियाँ यहाँ बहेंगी, नहीं तो पुरानी दुनिया का विनाश कैसे हो! अच्छा, बापदादा, मीठी माँ का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ